

Dr. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

E-MAIL- dhabeerparasad@gmail.com

EMOTION

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने संवेग के शाब्दिक अर्थ को ध्यान में रखकर इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि “प्राणी की उत्तेजित अवस्था को संवेग कहते हैं”। इमोशन शब्द की उत्पत्ति लैटिन के इमुवर से हुआ है जिसका अर्थ होता है उत्तेजित करना। परन्तु इस परिभाषा से संवेग का पुरा स्वरूप स्पष्ट नहीं होता है। संवेग में न केवल उत्तेजित अवस्था का बोध होता है, बल्कि एक खास तरह के भावात्मक अनुभव जैसे- प्रेम, क्रोध या भय की चेतना भी होती है। इसके अलावा संवेग की अवस्था में बाह्य तथा आंतरिक शारीरिक क्रियाएँ भी होती हैं।

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने संवेग के अनुभव संबंधी पहलू को ध्यान में रखकर इसे परिभाषित करने का प्रयास किया है। दूसरी ओर कुछ मनोवैज्ञानिकों ने व्यवहार पक्ष पर बल दिया है। ऐसे मनोवैज्ञानिकों में व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों वाटसन का नाम प्रसिद्ध है। संरचनावादी परिभाषा में व्यवहार को गौण रखा गया और व्यवहारवादी परिभाषा में अनुभव-पक्ष की उपेक्षा की गयी। इसलिए ये दोनों तरह की परिभाषाएँ असंतोषजनक प्रमाणित हुई हैं।

संवेग को परिभाषित करते हुए पी. टी. यंग ने कहा- “संवेग व्यक्ति की एक तीव्र उपद्रव की अवस्था है, जिसका प्रभाव उसपर सम्पूर्ण रूप से परता है, जो मनोविज्ञानिक ढंग से उत्पन्न होती है और जिसमें चेतन अनुभव, व्यवहार एवं आन्तरांग संबंधी कार्य सन्निहित होते हैं”। इस परिभाषा का विश्लेषण करने पर संवेग के संबंध में निम्नलिखित बातों का पता चलता है। जैसे-

1. संवेग तिव्र उपद्रव की अवस्था है। इस अवस्था में व्यक्ति के अनुभव एवं व्यवहार में तिव्र परिवर्तन होते हैं।
2. संवेग की अवस्था प्रणी में सम्पूर्ण रूप से उपद्रव की स्थिति देखी जाती है। इस अवस्था का प्रभाव उसके सम्पूर्ण अनुभव तथा व्यवहार पर परता है।
3. संवेग की उत्पत्ति मनोवैज्ञानिक आधार पर होती है। उसका प्रभाव व्यक्ति की किसी ज्ञानेन्द्रिय पर परता है जिससे स्नायु-प्रवाह पैदा होता है जो स्नायु तंत्र के विशेष भाग में पहुँचकर संवेग उत्पन्न करता है।
4. संवेग में व्यक्ति को उपद्रव की अवस्था की चेतना रहती है। व्यक्ति यह महसूस करता है कि वह अमुक संवेगात्मक अवस्था में है। जब व्यक्ति भय अवस्था में होता है तो उसे इस बात की चेतना रहती है कि वह भय का अनुभव कर रहा है।
5. संवेग में कुछ विशेष प्रकार के व्यवहार भी होते हैं। क्रोध की अवस्था में आक्रमणकारी व्यवहार करना,

गाली-गलौज करना, आदि व्यवहार देखे जा सकते हैं।
भय के संवेग में रोना-चिल्लाना, कापना, भागना आदि
व्यवहार अक्सर देखे जाते हैं।

स्पष्ट है कि संवेग एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है,
जिसमें संज्ञानात्मक प्रक्रिया, भावात्मक प्रक्रिया तथा
प्रेरणात्मक प्रक्रिया के साथ-साथ शारीरिक उत्तेजन भी
शामिल होते हैं।